राजस्थान राज्य में जैविक उत्पादन व उपभोग द्वारा सतत् उपभोग व जीवनशैली की संस्कृति का विकास (प्रोऑर्गेनिक II)

CUTS International

जैविक खेती – नई दिशाएँ

भारत के किसान को समृद्धशाली बनाने का एकमात्र उपाय - जैविक एवं विषमुक्त कृषि

जैविक खेती – सतत् खेती – सतत् उपभोग

किसान अपने पारम्परिक ज्ञान का उपयोग करते हुए खेती करता है, जिसमें उसका अपना बीज, जैविक खाद, फसल चक्र एवं जैविक कीट नियंत्रण समाहित है। इन सबको शामिल करते हुए खेती जब किसान करता है तथा उससे जो उत्पादन प्राप्त होता है, वह पूर्ण रूप से जैविक होता है इसको हम सतत् खेती भी कह सकते हैं। इससे सतत् उपभोग को भी बढ़ावा मिलता है।

खेती में नहीं करेंगे यूरिया का उपयोग
तो पायेंगे जैविक उपभोग

रासायनिक खेती ने किया विनाश
सिर्फ जैविक खेती से संभव – सबका साथ सबका विकास

आज के दौर में रासायनिक खेती ने सभी वर्गों को निराश किया है। यदि हम जैविक खेती की ओर बढ़ते हैं तो सभी का विकास संभव है। (सबका साथ, सबका विकास)

सबका साथ – यदि हम जैविक खेती में सभी स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों, सूक्ष्म जीवों से लेकर पशु–पक्षी और मित्र कीटों को साथ लेकर खेती करते हैं तो इसमें सबका साथ मिलेगा एवं जैविक खेती संभव होगी।

सबका विकास – जैविक खेती में स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग होता है, जिससे स्थानीय स्तर पर आर्थिक विकास बढ़ता है।

अपना बीज बनाना, वर्षा जल बचाना
अच्छी खाद बनाना, फसल चक्र अपनाना

जैविक खेती– लाभकारी

1. बीज, खाद, कीटनियंत्रक में सिर्फ मेहनत की लागत
2. शुरूआत में लागत अधिक, कुछ वर्षों बाद न्यूनतम लागत कम होने अत: सामान्य बाजार भाव पर बेचने से भी शुद्ध लाभ ज्यादा
3. वर्तमान में जैविक उत्पादों को मूल्य अधिक
4. स्वास्थ्य के लिये लाभदायक – किसान व उपभोक्ता दोनों के दवा खर्च में बचत
5. जलवायु परिवर्तन का कम प्रभाव
6. सूखा व अधिक वर्षा दोनों स्थितियों को सहने की बेहतर क्षमता
7. सुरक्षित खेती – नकली बीज, नकली उर्वरक, नकली कीटनाशक का कोई खतरा नहीं

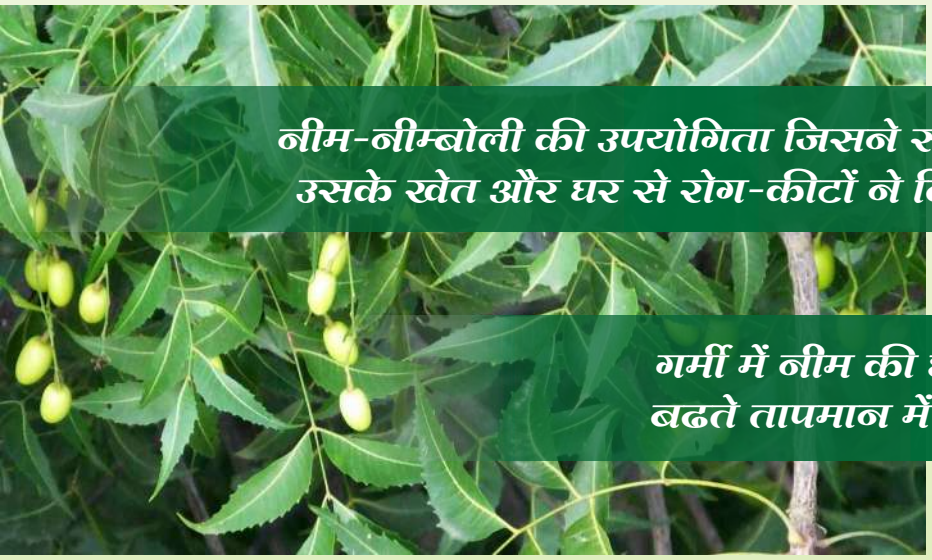

नीम-नीम्बोली की उपयोगिता जिसने समझ ली
उसके खेत और घर से रोग-कीटों ने विदा ली

गर्मी में नीम की छाया सबसे ठंडी होती हैं
बढते तापमान में राहत देने वाला वृक्ष है।

अप्रेल मई जून में जरूर ये काम करवाना
हरी खाद बनाना, नीम्बोली इकट्ठी करवाना
फल वृक्ष जरूर लगाना, उनके गड्ढे करवाना
इसके बाद खेती से सिर्फ लाभ कमाना

निवेदन है कि भारत में लाखों नीम के पेड़ हैं और हर वर्ष कई हजार टन नीम्बोली पैदा होती हैं, इसमें से बहुत थोड़े को ही इकट्ठा किया जाता है। शेष व्यर्थ चला जाता है।

यदि मई–जून माह में गाँव–गाँव में नीम उत्सव आयोजित कर नीम्बोली इकट्ठा कर खेत में उपयोग कर या नीम तेल, खल बनाकर बेचा जाए तो इससे किसान एवं कृषि विकास को बढ़ावा मिलेगा।

1. आय का साधन
2. मृदा स्वास्थ्य की रखवाली
3. भूमि के नाइट्रोजन की हानि को रोकने में सहायक
4. जैविक खेती के लिए एक प्रमुख आदान – भूमि में रोग–कीट नियंत्रण में सहायक

साथ ही

- नीम का मानव स्वास्थ्य पर भी बहुत बड़ा योगदान है। उसके बारे में भी जन चेतना बढेगी तथा बुखार, पेट के कीड़े, त्वचा रोग आदि के प्रकोप से बचाने में सहायक होगी।
- नीम के पेड़ को कम पानी की आवश्कता होती है। अत: वर्षा की कमी में भी अतिरिक्त आय का साधन हो सकता है।

अत: आपसे निवेदन है कि यदि आपको उपयोगी लगे तो इस संदेश को गाँव–गाँव तक पहुंचावे।

अत: यदि सबका साथ-सबका विकास चाहिए तो
जैविक खेती को हर गाँव हर खेत तक लाइये।

जैविक खेती – भविष्य की खेती (जलवायु परिवर्तन में सुरक्षा)

जैविक खेती से निम्न प्रकार से जलवायु परिवर्तन कर खेती पर हो रहे बुरे प्रभावों को कम किया जा सकता है।

1. जैविक खाद के प्रयोग से भूमि की जलधारणा क्षमता बढ़ती है, जिससे वर्षा की अनियमितता में भी फसल को पानी मिलता रहता है। साथ ही, सिंचाई की संख्या भी कम हो जाती है। प्रयोगों से पाया गया है कि जैविक खाद के प्रयोग से ग्वार–तिल आदि फसलों ने 42 दिन के सूखाकाल के बाद भी उत्पादन दिया, जबकि रासायनिक खाद के द्वारा उगाई गई फसल 17 दिन बाद ही नष्ट हो गयी। इसी प्रकार गेहूँ में जैविक प्रबन्धन से 4 सिंचाई में ही अच्छी पैदावार प्राप्त हुई। अधिक वर्षा की स्थिति में भूमि में वायुसंचार बना रहता है, अत: फसल सड़ती या पीली नहीं पड़ती है। जैविक खाद से फसलों की जड़ों का अच्छा विकास होता है जो तेज हवा में फसल गिरने से बचाता है।
2. जैविक खाद के प्रयोग से संतुलित पोषण मिलने के कारण फसल में सूखा सहने व रोग–कीट से लड़ने की ताकत बढ़ती है। साथ ही तापमान की विषमता का भी कम प्रभाव पड़ता है।
3. जैविक खेती में जैव विविधता, फसल चक्र आदि के होने से जलवायु परिवर्तन के कारण अचानक होने वाले ताप, वर्षा, आद्रता आदि के परिवर्तनों का प्रभाव बहुत कम हो जाता है।
4. जैविक खाद के प्रयोग से भूमि में 200–300 किलो कार्बन का अवशोषण (सीक्रेस्ट्रेशन) होता है जो कि जलवायु परिवर्तन को कम करने में सहायक होता है।
5. जैविक खेती में सभी आदान खेत पर ही बनाए जाते हैं, अत: रासायनिक खेती के मुकाबले लागत 30–40 प्रतिशत कम हो जाती है और यदि मौसम साथ नहीं भी देता तो कम से कम रसायनों के लिए लिया जाने वाला कर्ज तो नहीं चुकाना पड़ता है।

जो धरती को जीवन देती - वो है जैविक खेती

पंचगव्य: भूमि को सजीव व फसल को ताकतवर बनाएं

सामग्री: पांच किलो गोबर, तीन लीटर गौमूत्र, दो लीटर दही, दो लीटर दूध, 500 ग्राम घी, एक किलो शहद या गुड़, एक किलो मीठा फल (केला आदि)।

विधि: सबसे पहले गोबर, घी और गुड़ को एक पात्र में मिलाकर छांव में तीन दिन रखें। फिर इसमें अन्य सामग्री मिला दें व प्रतिदिन एक बार घोल को हिलावे, 17–18 दिन बाद पंचगव्य तैयार हो जाता है। इसे पानी में मिलाकर घोल 200 लीटर बनाले व जुताई–बुवाई के बाद एक एकड़ भूमि में इसका छिड़काव करें। इससे भूमि में लाभदायक सूक्ष्मजीवों व केचुओं की संख्या बढ़ेगी। पौधों पर इसका 3 प्रतिशत पानी में घोल का प्रति सप्ताह छिड़काव करने से पौधों की बढ़वार व उपज बढ़ती है साथ ही रोग, कीट व सूखा सहन करने की सक्षता भी बढ़ती है।

अपना बीज-खाद-पानी और प्रयास कि बाजार में कैसे मिले पूरे दाम।
सबसे सरल है ये जैविक खेती - दाम के साथ मिले दुनियां में नाम।

खेती में लागू हो प्रकृति का संविधान
हरित क्रांति बन गयी भ्रमित क्रांति
किसान भूला ज्ञान – खेती हो गयी भेड़चाल
उगाता है एक ही फसल सालों साल होता कंगाल
भूमि और बाजार का नहीं रहता ख्याल
खाद बीज बेचने वाले खींचते उसकी खाल
खेती में भी गणतन्त्र तभी आएगा
जब खेती का प्रकृति से तालमेल हो जाएगा
बाजार से नहीं खुद का खाद, बीज बनाएगा
किसान भेड़चाल और भेड़ियों से बच पाएगा
खेती में प्रकृति का संविधान लग जाएगा
न किसान जहर खाएगा न किसी को खिलाएगा
जान देने नहीं – शान से युवा खेती अपनाएगा
तब धरा स्वस्थ – किसान खुशहाल हो जाएगा

जैविक खेती – सुलभ : आसानी से उपलब्ध

- ग्राम या खेत स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग व पुनर्चक्रण (जल, जमीन, खाद, वनस्पति, पशु)
- उन्नत बीज का उत्पादन – भंडारण व ग्राम या समान जलवायु क्षेत्रों में आदान–प्रदान
- न नकली का डर – न कम – न ज्यादा उपयोग से हानि का फिकर
- एक बार प्रकृति का जैविक चक्र शुरू हो जाये तो कुछ भी बाहर से लाने की आवश्यकता नहीं

एक गाय + एक नीम = एक बीघा जमीन

हरी खाद – खरपतवार हो बर्बाद – फसल को करे आबाद

ढैंचा, सनई, चवला मिलाएँ - अप्रेल या जुलाई में लगाएँ,
अगली फसल का बिना यूरिया के बम्पर उत्पादन पाए

- **अहिंसक:** किसान न जहर खिलाये और न उसे स्वयं खाना पड़े
- **स्वच्छ:** खेती में रसायनों की गंदगी न फैलाये और खेत के कचरे + गोबर से कंपोस्ट खाद बनाएँ
- **स्वदेशी:** हमारी भूमि, हमारा बीज, हमारी खाद और हमारी कई पीढ़ियों की शान। साथ में पड़ौसी + प्रकृति का सहयोग।
- **आत्मनिर्भर:** बाहरी आदनों यानि रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक आदि पर निर्भरता समाप्त और स्वयं के पास उपलब्ध साधनों का सदुपयोग

जिला सहयोगी संस्थाएं

1. कट्स मानव विकास केन्द्र, चित्तौड़गढ (चित्तौड़गढ, भीलवाड़ा, प्रतापगढ)
2. प्रयत्न समिति, उदयपुर
3. हनुमान ग्राम विकास समिति, दौसा
4. रूरल डवलपमेंट सोसायटी एण्ड वोकेशनल ट्रेनिंग ओर्गेनाईजेशन (रूडसोवोट), सवाई माधोपुर
5. राम कृष्ण शिक्षण संस्थान, कोटा
6. सामाजिक विकास संस्थान, झालावाड़
7. मरूधर गंगा सोसायटी, मानकलाव, जोधपुर

स्रोत : डॉ. ए.के. शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (काजरी) जोधपुर

CUTS International®
कट्स सेन्टर फॉर कन्ज्यूमर एक्शन, रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग
D-217, भास्कर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर 302016, फोन: +91.141.2282821; फैक्सः +91.141.4015395, 2282485
ई–मेल: proorganic@cuts.org; वेबसाईट: www.cuts-international.org/CART/proorganic-II
यहां भी दिल्ली, कोलकता और चित्तौड़गढ़ (भारत); लुसाका (जाम्बिया); गैरोबी (केन्या); आक्करा (घाना); हनोई (वियतनाम); जिनेवा (स्विटजरलैंड) और वॉशिंगटन डी.सी. (यूएसए)

सहयोग से
Swedish Society for Nature Conservation

This document has been produced with the financial contribution by Swedish public development co-operation aid through the Swedish Society for Nature Conservation, SSNC. The views herein shall not necessarily be taken to reflect the official opinion of SSNC or its donors.

जुलाई 2020